ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org

An International Multidisciplinary Research E-Journal

वेदकालीन परिवारभाव

डॉ. मधुभाई एम. हीरपरा

एम.ए., एम.एड्., पीएच.डी. (व्याख्याता)

दरबार गोपालदास शिक्षण

महाविद्यालय, अलीआ बाडा

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research E-Journal

शोधपत्र

प्रास्ताविक:

"आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः ।'[1] वेदमें जो दिव्य या प्रकाशमान ज्ञान है वे सब इस संसार में प्रवृत हो । ऐसा व्यासजीने उचित रूप से कहा है । यह वचन को सार्थक करने के लिए सभी को प्रवृत होना पड़ेगा । ये सब स्रोत के मूल विश्वपरिवारमें निहित है । अथर्ववेद में कहा है की 'अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः ।'[2] और 'तत् कृण्मो ब्रह्म वो गृहे ।[3] ऐसा कहकर परिवार ऐक्य की भावना प्रदर्शित की गई है । अतः इस लधुशोध प्रपत्र में वैदिक साहित्य के इस भाव को व्यक्त करने का संक्षिप्त प्रयास किया गया है ।

ऋग्वेद में परिवार :

वैदिक साहित्य का प्राचीनतम वेद ऋग्वेद है । उसमें हर जगह ऋचाओं की वजह से परिवारबोध देखने को मिलता है । जैसे 'सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्शवः 14 अपनी पत्नी के सिवा और कोई नारी का स्मरण मत करो । शीशूला न क्रीलाः सुमातरः ।[5] अर्थात्पूवड नारीयों के द्वारा दुर्गुणी संतति का जन्म संभव है । इसलिए कूबड़ नारियाँ से संसार मत करो । क्योंकि उत्तम माता ही उत्तम संतति पैदा करती है ।

तमस्मैरा युवतयों युवानं मर्मृजयमानाः परि यन्त्यापः ।

स शुक्रेभिः शिक्क भी रेवदस्मे दीदायानिध्मो धृतनिर्णिगप्सु ॥ ",

जिसका हृदय शुद्ध, निर्मल एवं पवित्र है वह युवक और युवतीओंने ही शादी करनी चाहिए तनकौवतवाला पुरूष लग्न करके परिवार को तेजपूर्ण बनाये,

सम्राज्ञी श्वसुरेभव, सम्राज्ञी श्वश्रवां भव ।

ततान्दारे सम्राज्ञी भव, सम्राज्ञो अधि देवृषु ॥

है वधू ! तू परिवार में ऐसे जीवन व्यतीत कर जिससे, सास, श्वसुर, नन्नद और देवर सबके सन्मान पात्र बन सके,

सूयपसाद् भगवती हि भूया अथो वयं भगवन्तः स्याम् ।

अद्धि तृणमदन्ये विश्वदानी पिब शुद्धमुदकमाचरन्ति ॥ 8

अर्थात् संतान सुशिक्षत बन पाये इसलिए माता ज्ञानवान बन जाये । जो नारी सदाचारी पुरुष के साथ विवाह करके संतति को पैदा करती है और उस संस्कारित बनाती हैं, इससे ही समाजगौरव बढ़ता है । इसकी सहाय कामधेनु की तरह पवित्र होती हैं । इस प्रकार ऋग्वेद में भिन्न भिन्न ऋचाओं के माध्यम से कुटुम्ब के महत्वपूर्ण अंग स्त्री और पुरूष किस प्रकार अपना परिवार को अच्छा बना सके उसका बोध दिया गया है । मनुस्मृति में भी इस कार्य में नारी का महत्व सिद्ध करके बनाया है कि, "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः । ' जहाँ नारीओ की पूजा होती है उस परिवार में देवता भी आन्नद पाते है । ऋग्वेद में भी ऐसी नारी को पृथिवी स्वरूप माना गया है ।

यजुर्वेद में परिवार :

वेदत्रयी में जिसका स्थान अद्वितीय है । ऐसा युजर्वेद में परिवार के यज्ञीयभाव, संप, सुलेह, शांति और, सुसंस्कार के बहुत मंत्र दिये गये है जो इस प्रकार है । मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्य देवो भव।[10] अर्थात् परिवार में माता बह्या स्वरूप, पिता, विष्णु स्वरूप और गुरू ज्ञानराणा शिवरूप है । ये भाव शुक्ल यजुर्वेद में तैतरीया उपनिषद का महत्वपूर्ण अंश है ।

'आ पवस्य हिरण्यवदश्व वत्सेप्म वीरवत् ।

वाजं गोमन्तमा भर स्वाहा ॥ * [11]

संसार परिवार को अच्छे ढंग से चलाने के लिए मानवने स्व पुरुषार्थ से कनक, पशु और धनप्राप्ति करनी चाहिए इसके सिवा गृहस्थाश्रम परिपूर्ण नही होता । गृहस्थाश्रम की उन्नति पुरुषार्थ में ही है । इसी ही तरह;

लोकं पृण छिद्रं वृणाथी सीद ध्रुवा त्वम् ।

इन्द्राग्नि त्वा बृहस्पतिरस्मिन योनावसीषदन् ॥ [12]

अर्थात् अच्छी नारी घरका हर कार्य रसपूर्वक पुर्ण करती है कीसी भी कार्य में प्रमाद नहीं करती प्रत्येक विद्वान एवं श्रेष्ठ नारी गृहस्थधर्म का आचार किस प्रकार से करती है उसकी शिक्षा वे अन्य स्त्रीयों को भी देती है ।

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवशनी ।

यच्छा नः शर्म सप्रथा : अप नः शोशुचदधम् ॥ [13]

अर्थात् जिस नारीमें भूमि जैसा क्षमाभाव, क्रूर भाव से मुक्ति और परदोष निवारण का भाव हो । वह नारी गृहसंसार में उचित है । सदगृहस्थ को क्या करना चाहिए वो बात इस मंत्र में कही गई है;

पुनन्तु मा देवजना: पुनन्तु मनसा धियः ।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेद: पुनीहि मा || [14]

अर्थात् सद्गृहस्थ अपने पुत्र-पुत्रीओं को ब्रह्मचर्य, सदाचार एवं विद्या द्वारा विद्वान, सुन्दर और चारित्र्यवान बनाने का पवित्र कर्तव्य सदैव करते हैं: और अपनी संतति को बलप्रद करने के लिए प्रस्तुत श्लोकमें विधान है, जैसे;

उप नः सूनवो गिरः श्रृण्वन्तवमृतस्य ये । समृदीका भवन्तु नः ॥[15] अर्थात् माता-पिता बच्चों के हित के लिए ब्रह्मविद्या की शिक्षा देकर तन और आत्मिक बल बढ़ाये इसी प्रकार यजुर्वेद ये सब यज्ञीय मंत्रो में परिवार यज्ञ से संसार की उत्कृष्टता की ईच्छा करता है ।

अर्थववेद में परिवार :

अथर्ववेद इहलोक का मार्गदर्शन करनेवाला वेद है । परिवार के लिए उस में जो कहा गया है वह इसी प्रकार है । "मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसार मुतास्वसा[16] बन्धु-भगिनी आपस में द्वेष न करें । “जग्धपाप्मा यस्यात्र् मश्नन्ति ।[१७]आतिथ्यभाव से पाप का नाश होता हैं । और पत्नी के बारे में कहाँ है; "त्वं सम्रात्येधि पुत्युरस्तं परेत्य | [18] पत्नी पति के घरकी साम्राज्ञी है इसलिए; ब्रह्मणस्ये पतिमस्यै रोचय ।[19] पति, पत्नी का प्रेम बने । और आगे; "ई हैवस्तं मा वियौष्टम् ।[20] पति - पत्नी प्रेम धागे में बन्धे रहे और "इह पुष्यतं रयिम् ।

"[21] पति-पत्नी दोनों मिलकर अथोपार्जन करे । दोनों के प्रेम का दृष्टांत इस प्रकार दिया हैं: चक्रवाकेव दम्पती ।[22] दम्पती चक्रवाक चक्रवाकी की तरह प्रेम करे । तथा पति-पत्नी के हृदय एक बन जाये मन इन्नो सहासति ।[२३] परस्पर विश्वास संपादन के बारे में कहा गया है कि; "ममदसस्त्व केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन ।[24] स्वभार्या के सिवा अन्य नारी का स्मरण भी ना करे। क्योंकि जो मनुष्य बहुपत्नी करते है वो नर दुःखी होते हैं । स्त्रीयों को भी कहा गया है कि; जाया पत्ये मधुमती वाचं । "[25] नारी मधुर वचन बोले कर्कशा से गृहशांति नष्ट बनती है । कैसा पुत्र होना चाहिए, ? वो बाते भी इस वेद में बतायी गई है, "पुमांस पुत्रं जनय । साधुं पुत्रं जनय | "[26] योग्य संतान ही पैदा करे; संतान को बलवान सज्जन बनाये | "जायाः पुत्राः सुमनसो भवन्तु ।[२७] स्वभार्या और पुत्रो को सद्विचारवान बनाईए । दाम्पत्य की मधुरता के बारे में इस श्लोक कहाँ गया हैं;

"अक्ष्यौ नौ मधुसंकाशे अनीकं नौ समञ्जनम् ।

अन्तः कृणुष्व मां हृदि मन इन्तौसहाति ॥ [28]

हम दम्पती परस्परं प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखे । मुख से मधुर वचन बौलकर एक दूसरे के हृदयमें स्थान प्राप्त करे | हमारे दो तन का एक ही मन बने ।

"ममेयमस्तु पोष्यां मह्यं स्वादाद् बृहस्पति ।

मयापत्या प्रजावति सं जीव शरदः शतम् ॥[२९] इस श्लोक में पत्ति अपनी जिम्मेवारी स्वीकारता हुआ कहता है कि, हे भार्या, प्रभुने तुझे मुझको समर्पित की हैं । तेरी आजीविका की जिम्मेवारी मेरी हैं । हम दोनों संतान पाकर शत साल तक जीते रहें । श्लोक १४/१/४३ में वधू को समुद्र की उपमा देकर कहा गया है कि; जैसे सागर बादल को बरसाकर नदीओं को जल देता है अर्थात् नदीयाँ को नियंत्रित करता है उसी तरह है वधू ! तुम भी गृह की मालकिना बनकर सारा खानदान को सुखी कर देखो, यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषवे वृषा ।

एवा त्वं साम्राज्येधि पत्यरस्तं परेत्य ॥ [30] ओर भी;

"अधोरयक्षुरपतिघ्नी स्योनां शंग्मा सुसेवा सुयसा गृहेभ्यः ।

वीरा शूदेवृकामां सं तव्यैधिषीमहि सुमनस्यमाना ||" [31]

हे वधू ! तुम प्रियदर्शिनी बनकर शुद्धअन्त:करण से परिवार का भला कर इससे ही धरमें सुख-सम्पति की वृद्धि होगी ।

धाता दधातु नो रदिमीशानों जगतस्पतिः ।

स नः पूर्णेन यच्छतुं ॥ [32]

गृहस्थी लोग स्वपुरुषार्थ से परमात्मा की कृपा से धन और बल दोनों पाकर सुख को प्राप्त करे ।

अश्लीला सनूर्भवति रूशनी पापयाभुया ।

पतिर्यद् बध्वोः वाससः स्वमङजमाभ्युर्णते | [32]

अर्थात् जो पुरूष भार्या उपार्जित द्रव्य का उपयोग करते है वो अपवित्र हो जाता है । अर्थात् दहेज लेना महापाप है । अतिथि को प्रथम खिलाना चाहिए ये भाव, "एषा वा अतिथिर्यच्छ्रोत्रियस्तस्मात् पूर्वी नाश्नीयात् ॥ श्लोकांशमें बताया है। माता-पिता एवं गुरू का प्रेम पाने के लिए शुभकर्म करने का इस श्लोक में बताया गया है;

स्वाक्तं में धावापृथिवी स्वाक्तं मित्रो अकरयम् ।

स्वाक्तं में ब्रह्मणस्पतिः स्वाक्तं सविता करत् ॥ [35]

परिवार के सब सदस्य कैसा हो इसके बारे में प्रस्तुत श्लोक बताया गया है ।

"अपहूता भूरिधनाः सखायः स्वादुसमुदः । अक्षुध्या अतृष्या स्त गृहा मास्मद् विभीतन् ॥[३६]

अर्थात् सब सदस्य धन उपार्जन करनेवाला, श्रद्धावान और आनंदी हो । वे क्षुधा और तृषा से व्याकुल न हो एवं भी न हो। इसके अलावा निम्न श्लोक में सब परिवारजन आन्मोन्निति के कार्य में जूड़े रहे ऐसा बताया है । जैसे;

अर्चत प्रायत प्रियमेधासो अर्चत ।

अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्यत ॥ [38]

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research E-Journal

इसी प्रकार वेद के हर पृष्ठ पर परिवारभाव प्रकट होता है ।

उपसंहार:

प्रा. इमर्सन कहते हैं कि वेद ही हमारे जीवनको श्रेष्ठ बना सकता है । युरोप के सबदर्शन और विज्ञान उसके आगे तुच्छ है । इसलिए वेदों का ही अनुसरण कीजिए । "स्वामी दयानंदजी भी वेदों की उत्कृष्टता को व्यक्त करते हैं, 'वेद सर्व सत्य विद्याओं के ग्रन्थ हैं । "38 भारत की आदर्श गृह सजावट एवं परिवार संगठन का भाव वेद में जगह-जगह पर दिखाई देता है । अतः गुरु नानकदेवने इसलिए 'चारो वेद ब्रह्मवाक्य है । "[39] ऐसा योग्य ही कहा है।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org

An International Multidisciplinary Research E-Journal

संदर्भ

१. ले. पांडुरंगशास्त्री आठवले. व्यासविचार, प्राक्कथन. पृष्ठ 26

२. पं. श्रीरामशर्मा आचार्य. वेदोकी सुनहरी सुक्तियाँ, श्रद्धांजली प्रकाशन - पृष्ठ 26

३. वही - अथर्ववेद - 3/30/4

४. पं. श्री रामशर्मा आचार्य. वेदों का दिव्य सन्देश, ऋग्वेद संहिता -105/8

५. 5 से 8 तक 'ऋग्वेद' क्रमशः 10/78/6, 2/35/4, 10/85/46, 1/164/40

६. मनुस्मृति अध्याय-३, सस्तु साहित्य प्रकाशन

७. 10 से 15 तके यजुर्वेद पूर्वोक्त-4 1/10, 8/63, 15/59, 35/21, 19/39, 33/77

८. 16 से 25 तक अथर्ववेद, श्लोक 3/30/3, 9/6/1, 14/1/43, 14/1/31, 14/1/22. 14/2/37, 14/2/64, 3/23/2 और 20/129 वही पृष्ठ-381 वही 382-2

९. 26 से 37 तक पूर्वोक्त 2 और 4- अथर्ववेद 3/23/2 तथा 20/129. 3/4/3

१०. संदर्भ - 28 से 37 तक अथर्ववेद क्रमशः 7/36/1 पृ.310, 14/1/52 पृ. 312, 14/ 1/143 .316, 14/12/17 .318, 7/17/1 .322, 14/1/27, .314, 9/6 (3)(7) प.336, 7/30/1 9.338, 7/60/4, पृ.340, 20/92/5 प.342

११. पं. श्रीरामशर्मा आचार्य, वेदों का दिव्य संदेश, पृ. 387 39. वही पृ.38